ISSN 2321-1288

Registered & Listed in UGC (Care List)

RAJHISCO

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS

PROCEEDINGS VOLUME XXXV

Department of History & Culture, Manikyalal Verma Shramjeevi College, Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidhyapeeth, Deemed-to-be-University, Udaipur

SEPTEMBER - 2021

www.rajhisco.com

rajhisco@gmail.com

ISSN 2321-1288

Registered & Listed in UGC (Care List)

RAJASTHAN
STORY CONGRESS

Chief Editor

Professor S.P. Vyas

Ret. Professor & Head, Jai Narain Vyas University, Jodhpur
Emeritus Fellow, UGC ; SAF, ICHR, New Delhi

Editor

Dr. Manorama Upadhyaya

Principal, Mahila P.G. Mahavidyalaya, Jodhpur

Managing Editors

Dr. T.V. Vyas
Dr. Anil Purohit
Dr. Ravindra Tailor

PROCEEDINGS VOLUME XXXIV

Department of History & Culture, Manikyalal Verma
Shramjeevi College, Janardan Rai Nagar Rajasthan
Vidhyapeeth, Deemed-to-be-University, Udaipur

SEPTEMBER - 2021

www.rajhisco.com

89. इष्टदेव श्री एकलिंग जी : मेवाड़ राजव्यवस्था में महत्वपूर्ण धार्मिक प्रतीक
–अर्चना शर्मा ... 778

90. राजस्थान की सामाजिक संस्कृति पर वैष्णव धर्म का प्रभाव
–स्वाति जैन ... 783

91. श्रीमाल पुराण के आधार पर भीनमाल क्षेत्र के प्रसिद्ध देवालय एवं लोक मान्यताएं
–पीयूष भादविया एवं मोहित शंकर सिसोदिया ... 787

92. पन्नी पठानों के संदर्भ में शेखावाटी प्रदेश का इतिहास लेखन
–ज़ाहिदा शबनम ... 796

93. उन्नीसवीं सदी में राजस्थान के देशज इतिहास लेखन में राष्ट्रवाद
–विक्रमसिंह अमरावत ... 800

94. पद्धति साहित्य में पंडित चक्रपाणि मिश्र कृत राज्याभिषेक पद्धति
–कुसुमलता टेलर ... 812

95. हिन्दी साहित्य का आदिकाल : क्या इसे 'चारण काल' कहा जा सकता है?
–महेन्द्रसिंह राव ... 817

96. राजस्थान और मध्य प्रांत के संदर्भ में हिन्दी भाषा का विकास
–निष्ठा श्रीवास्तव ... 822

97. राजस्थानी व अन्य उत्तर भारतीय साहित्य और आरंभिक आधुनिकता की कुछ झलकियाँ
–पंकज झा ... 830

98. भारतीय फिल्मी दुनिया में राजस्थानी लोकगीतों का प्रभाव
–कन्हैया कुमार यादव ... 835

99. श्री सादुल संग्रहालय
–सोरभ भास्कर ... 841

श्रीमाल पुराण के आधार पर भीनमाल क्षेत्र के प्रसिद्ध देवालय एवं लोक मान्यताएं

पीयूष भादविया एवं मोहित शंकर सिसोदिया

भीनमाल, राजस्थान के जालोर जिले का एक उपखण्ड है। भीनमाल, प्राचीनकाल में महाजनपदकालीन विराटनगर (जयपुर) की भांति ऐतिहासिक महत्ता रखता है।[1] भीनमाल को पूर्व में श्रीमालनगर, श्रीमालपुर, रत्नमाल, पुष्पमाल, फूलमाल, आलमाल, सिंधुराजपुर, भिल्लमाल जैसे कई नामों से जाना जाता रहा है।[2] श्रीमालनगर नाम ऐतिहासिकता की दृष्टि से अत्यधिक प्रसिद्ध रहा है। भीनमाल 7वीं से 12वीं शताब्दी तक एक उन्नत व्यापारिक, धार्मिक एवं राजनीतिक केन्द्र रहा है। यह शैव-वैष्णव-शाक्त-सौर सम्प्रदायों एवं ब्राह्मण-जैन-बौद्ध धर्मों का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है। आयुर्वेद के विद्वान श्रीमहुर, महान गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त, महाकवि माघ, जैन विद्वान सिद्धर्षिगणि जैसे कई महान् विभूतियों की जन्मभूमि के साथ-साथ कर्मभूमि भी रहा है। भगवान् आदि शिव, नारद, वशिष्ठ, गौतम, मार्कण्डेय एवं कई ऋषियों की तपो-भूमि रहा है। यहां महावीर स्वामी ने अपने जीवन काल में विचरण किया है, अतएव भीनमाल या श्रीमाल क्षेत्र अपने आप में अति महत्वपूर्ण रहा है।[3]

भीनमाल के उद्भव में कई लोक एवं साहित्यिक मान्यताएं विद्यमान है। जिसमें एक है कि ब्रह्मापुत्र ज्योतिषाचार्य महर्षि भृगु, जिनकी दो पत्नियां क्रमशः पहली असुरराज हिरण्यकश्यप की पुत्री दिव्या देवी जिनसे दो पुत्र क्रमशः असुरगुरु शुक्राचार्य एवं सृष्टि निर्माता विश्वकर्मा तथा पुत्री 'श्री' लक्ष्मी हुई तथा दूसरी पत्नी असुरराज ;षि पुलोम की पुत्री पौलमी देवी जिनसे दो पुत्र क्रमशः च्यवन एवं ऋचीक हुए।[4] एक बार, एक विवाद के कारण भगवान् विष्णु ने दिव्या देवी की हत्या कर दी। महर्षि भृगु के क्रोध को शांत करने के लिए, महर्षि मरीचि ने भृगु पुत्री 'श्री' लक्ष्मी एवं भगवान् विष्णु का विवाह श्रीमालनगर में सम्पन्न करवाया तथा विवाद का अंत किया। अतः श्रीमालनगर 'श्री' लक्ष्मी एवं भगवान् विष्णु का विवाह स्थल माना जाता है। एक दूसरी लोक मान्यता के अनुसार सत्ययुग में जब भगवान् विष्णु एवं 'श्री' लक्ष्मी देवी आकाश मार्ग से श्रीमालनगर से विचरण कर रहे थे, तब 'श्री' लक्ष्मी देवी के गले में पहने हार के टूट जाने से अमूल्य मोतियों व रत्नों के बिखराव से नगर का प्रादुर्भाव हुआ, जिसके फलस्वरूप नगर का नामकरण 'श्री' अर्थात् लक्ष्मी तथा उनकी माला के युग्म से श्रीमालनगर नाम विख्यात हुआ।[5]

 ISSN 2321-1288

श्रीमाल पुराण का परिचय

स्कन्दपुराण के अन्तर्गत श्रीमाल महात्म्य का वर्णन है, जिसे श्रीमालपुराण भी कहा जाता है। मूल रूप से इसके लेखक महर्षि वशिष्ठ को माना जाता है। श्रीमालपुराण हमें प्राचीन भीनमाल के विभिन्न आयामों की जानकारी देता है। अंग्रेज विद्वान जैक्सन ने बॉम्बे गजेटियर–1896 ई. में श्रीमाल पुराण के ऐतिहासिकता की चर्चा सर्वप्रथम बार की है। जहां उन्होंने श्रीमाल पुराण के लेखन काल की गणना 14वीं शताब्दी से पूर्व की बताई है।[6] श्रीमाल पुराण का सर्वप्रथम बार प्रकाशन गुजराती भाषा में 1899 ई. में हुआ। इसका संस्कृत से गुजराती में अनुवाद जटाशंकर लीलाधर एवं केशवजी विश्वनाथ ने किया।[7] श्रीमाल पुराण में भीनमाल स्थित कुलदेवियों तथा कुलदेवताओं के बारे में भी बडे विस्तार से बताया है। वर्तमान भीनमाल में आज भी यह धार्मिक स्थल व्यवस्थित है, जिनमें देश भर से विभिन्न गोत्रों के लोगों की अपनी गहरी आस्था है। यह स्थल वर्तमान भीनमाल की सांस्कृतिक गतिविधियों को संचालित करते हैं। इन प्रमुख देवालयों की कुल संख्या ह्वेनसांग के वृतान्त के अनुरूप पचास से ज्यादा थी[8] तथा श्रीमालपुराण के अनुसार अठारह देवताओं की चर्चा मिलती है। इन अठारह देवताओं के मंदिरों में से तेरह के मंदिर भीनमाल नगर पालिका क्षेत्र में है, जबकि पांच मंदिर भीनमाल के निकटतम ग्रामों में अवस्थित है। इन मंदिरों के साथ जुड़ी मान्यताएं, भी श्रीमाल पुराण के अनुसार इस आलेख में प्रस्तुत है।

1. सिद्धि विनायक, गणेश नाडी, भीनमाल

यह गणेश मंदिर है, जो सिद्धि विनायक के नाम से जाना जाता है। जिनका मंदिर गणेश नाडी जो एक टेकरी पर स्थित नदी के किनारे पर है। यह मंदिर भीनमाल के उतर दिशा में सर्वाधिक आगे की ओर है, जिससे ऐसा लगता है कि तत्कालीन भीनमाल में उतर की दिशा में आगमन पर यह प्रथम धार्मिक स्थल रहा होगा। हालांकि मान्यताओं के अनुरूप विनायक या गणेश प्रथम पूज्यदेवता है, इसी के रूप में इस मंदिर की स्थापना हुई होगी। मंदिर पर कई भग्नावशेष भी मौजूद है, जहां मलेच्छों द्वारा नुकसान पहुंचाने की बात लिखी हुई है। मंदिर का जीर्णोद्धार हो चुका है। मंदिर में सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमा गणेशजी की है। इसके अलावा मंदिर प्रांगण में पंचमुखी हनुमान मंदिर एवं शनि मंदिर के साथ एक सुव्यवस्थित उद्यान भी है, जो मंदिर को रमणीय बनाता है। मंदिर के पीछे एक तालाब भी है।

2. वाराहश्याम का मंदिर परिसर, मुख्य सदर बाजार, भीनमाल

भगवान् विष्णु के तीसरे अवतार वराह की चर्चा श्रीमालपुराण में की गई है, जिनका मंदिर भीनमाल में अत्यधिक प्रसिद्ध है। वराहश्याम को भीनमाल का नगरधणी

माना जाता है। मंदिर केवल आस्था का केन्द्र नहीं अपितु सांस्कृतिक महत्व का भी वृहद् केन्द्र बना हुआ है। यह मंदिर भीनमाल के छत्तीस कौमों की सामूहिक सम्पत्ति के साथ आस्था का केन्द्र है।

मंदिर का संचालन श्री वाराहश्याम ट्रस्ट के द्वारा लम्बे समय से किया जा रहा है। मंदिर का परिसर काफी फैला हुआ है। प्रथम दृष्टि में मंदिर किसी धर्मशाला या बड़े घर जैसा प्रतीत होता है। शायद यह आक्रान्ताओं के भय से किया गया होगा। मंदिर का कोई शिखर नहीं है, दो गर्भगृह है। एक बड़ी रसोई, एक पुजारी आवास एवं मंदिर ट्रस्ट कार्यालय बना हुआ। मुख्य द्वार काफी बडा है। मंदिर में भीनमाल की विभिन्न खुदाइयों से प्राप्त विभिन्न कालखण्डों की मूर्तियां संरक्षित की गई है, जो विभिन्न देवी-देवताओं की जिन पर बहुत सुन्दर अलंकरण भी साफ देखने को मिलता है। यह मंदिर होने के साथ किसी म्यूजियम से कम नहीं लगता है।

प्रमुख मूर्तियों के रूप में तीन वराह मूर्तियां जिसमें एक मुख्य मूर्ति तथा दो छोटी मूर्ति है। विष्णु की कई मूर्तियां है। बुद्ध, ब्रह्मा, सूर्य, यक्ष, वरुण, कुबेर, अग्नि, नरनारायण, नारायण, गजलक्ष्मी, राम-लक्ष्मण, कृष्ण, गरूड, गणेश, शिव-पार्वती, हनुमान, शनि, भीलणी के वेश में पार्वती आदि मूर्तियां मंदिर की दीवारों में लगी हुई हैं। मंदिर में दो बडे शिवलिंग है, जो दो गौत्रों के कुलदेवता है। मंदिर में प्राचीन श्री जगतस्वामी सूर्य मंदिर के कई स्तम्भ है, जिसमें से तीन स्तम्भों पर अभिलेख भी है। यह स्तम्भ कलात्मक है। वाराहश्याम मन्दिर के पास 'वाराहश्याम पोल' है, जो काष्ठ से निर्मित है तथा काफी प्राचीन है। मंदिर की पूजा का जिम्मा मग या शाकद्वीपीय ब्राह्मण का है, जो प्राचीन समय में श्री जगतस्वामी सूर्य मंदिर के पुजारी हुआ करते थे। मंदिर में मेले के रूप में देवझूलनी एकादशी, कृष्णजन्माष्टमी, वराह जयंती, अन्नकूट महोत्सव प्रमुख रूप मनाये जाते है।इस मंदिर परिसर के मुख्य मंदिर निम्न है-

अ. नगरधणी वाराहश्याम

श्रीमाल पुराण में बताया गया है कि महापराक्रमी असुर हेरणाक्ष पृथ्वी का हरण कर रसातल में ले जाता है तो ब्रह्माजी की नासिका के छिद्र से अंगूठे जैसे आकार का एक शिशु वाराह प्रकट होता है, जो देखते ही देखते सर्वशक्तिमान हाथी के समान पर्वताकार हो जाता है। हिरणाक्ष वध कर पृथ्वी को पुनः स्थापित करते हैं।[१]

इस ही महत्ता को देखते हुए कई शासकों ने अपने राज्यक्षेत्र में वराह मंदिरों का निर्माण करवाया था, जो मध्यकाल से पूर्व तक सर्वाधिक प्रसिद्ध भगवान् विष्णु का अवतार था। देश में आज कई जगह मूर्तियों तो मिलती है, परन्तु विधिवत् पूजा देखने को नहीं मिलती है। राजस्थान में पुष्कर के अलावा केवल भीनमाल नगर में ही वराहावतार

 ISSN 2321-1288

की पूजा विधिवत् रूप से होती है।

श्री वराहश्याम मंदिर आज के भीनमाल के मुख्य सदर बाजार के केन्द्र में स्थित है। वाराह मूर्ति आज लगभग 550 वर्षों पूर्व श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर के पास से नींव खोदते समय प्राप्त हुई, जो पूर्व में वराह मंदिर की रही होगी। किसी प्राकृतिक आपदा से मंदिर तो नष्ट हो गया पर मूर्ति वैसी की वैसी थी। नगरवासियों ने निश्चिय किया की बैलगाड़ी से ढोते हुए, जहां बैलगाड़ी रुकेगी वहीं मूर्ति स्थापित की जाएगी। अतः वैसा ही हुआ आज भी यहां मूर्ति स्थापित है और इसकी प्राण-प्रतिष्ठा नहीं की गई है। गर्भगृह पर कोई शिखर भी नहीं है। वराह की आदमकद की मूर्ति है, जिसकी लम्बाई आठ फीट एवं चौड़ाई चार फीट है। मूर्ति पूर्ण रूप से जैसलमेर के गहरे पीले पत्थर की बनी हुई, जिसमें वराह के साथ लक्ष्मी एवं पैरों में नागदेवता आदि है।[10] मूर्ति की आंगी रजत मुखौटों, वस्त्रों, रंगों, पुष्पों आदि से मारवाड़ी शैली में की जाती है, जो श्रृंगार भक्तों को मोहित कर देता है। वराहश्यामजी की आरती चार समय की जाती है, जिसमें मंगला, श्रृंगार, संध्या एवं पौडावली आरतियां होती है। दोपहर में पुजारी परिवार के द्वारा पारम्परिक रूप से बनाया गया दाल-रोटा का भोग लगाया जाता है।[11] प्रसाद के रूप में मावे की मिठाई या पेडे चढाये जाते है। दिन-भर नगर की महिलाएं मंदिर परिसर में लोक गीत-भजन गाया करती है, जिससे मंदिर प्रांगण भक्तिमय हो जाता है।

ब. काश्यपेश्वर महादेव

काश्यपेश्वर महादेव, वराहश्याम मंदिर परिसर में स्थित शिवालय है। काश्यपेश्वर महादेव को यहां काशी विश्वनाथ महादेव के रूप में पूजा जाता है। शिवलिंग देखने में छोटे आकार का एवं बालू रंग का है। मंदिर के गर्भगृह में सामान्य शिवालय की भाति विभिन्न प्रतिमाएं है। ये 'काश्यप' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है।

श्रीमाल पुराण के अनुसार, काश्यपेश्वर महादेव काश्यप कुल में उत्पन्न हुए काश्यप मुनि श्रीमाल नगर में बसते थे। सर्पदंश से उनके पुत्र की मृत्यु हो गयी और सर्पदंश से मरने वाले मनुष्य को मोक्ष नहीं मिलता। कश्यप मुनि ने अतिउग्र तपस्या कर महादेवजी को प्रसन्न किया और विष उतारने वाला मंत्र प्राप्त किया। पाप का नाश करने वाला लिंग प्रकट हुआ और इच्छित वरदान में विषापहारिणी विद्या मांगी और यह बताया गया कि यह विद्या किसी और को दी तो भस्म हो जाओगे। प्रकट हुआ लिंग काश्यपेश्वर महादेव से विख्यात हुआ।[12]

स. वाल्मिकेश्वर महादेव

वाल्मिकेश्वर महादेव, वाराहश्याम मंदिर परिसर में खुले आसमान के नीचे आंगन में ही बिना गर्भगृह के यह शिवलिंग है। सामान्य शिवालय की भांति कोई

प्रतिमाएं नहीं, केवल शिवलिंग ही स्थापित है।शिवलिंग देखने में मध्यम आकार एवं सफेद रंग का है। ये 'सनकस' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है। श्रीमाल पुराण के अनुसार, यह शिवलिंग सर्वसिद्धि देने वाला है। वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को यहां की पूजा की विशेष महिमा है।

3. काकवाराह मंदिर, जुंजाणी रोड, भीनमाल

काकवराह मंदिर भीनमाल के जुंजाणी रोड पर स्थित है, जहां वराह की बालू पत्थर की मूर्ति है। जिसकी लम्बाई पांच फीट एवं चौड़ाई तीन फीट है। यह वराहश्याम की प्रतिमा से कम कलात्मक है। यहां काशी विश्वनाथ महादेव का मंदिर भी है। मंदिर के द्वार के दाई ओर कलात्मक मूर्ति चुनी हुई तथा बाई ओर विष्णुशयनी मुद्रावाली कलात्मक मूर्ति है। मंदिर के पुजारी वैष्णव संत है।

4. चण्डीनाथ महादेवमंदिर परिसर, भीनमाल

चण्डीनाथ महादेव मंदिरपरिसर,भीनमाल का सर्वाधिक वृहद् शिवालय परिसर है। इसमें मुख्य मंदिर चण्डीनाथ महादेव का है तथा प्रमुख मंदिरों में प्रयुतेश्वर, सोमनाथ महादेव, दत्तचण्डी देवी, ढुण्ढिराज विनायक, शीतला-ओरी माता,हनुमान आदि के हैं। ढुण्ढिराज विनायक की गणेश प्रतिमा अत्यधिक भव्य एवं कलात्मक है, जो क्षेत्र की सबसे बड़ी गणेश मूर्ति है। परिसर में लगभग सोलह शिवलिंग तथा अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं। परिसर में एक बावड़ी है, जिसे ब्रह्म कुण्ड कहते है, जिसका जल पवित्र होने के साथ चर्म रोग के लिए रामबाण है।

मंदिर की दीवारें किसी किले की दीवारों से कम नहीं है। एक भव्य द्वार है, जिस पर मजबूत दरवाजा भी लगा हुआ है। परिसर में पुजारी कक्ष में कई प्राचीन कलात्मक स्तम्भ है, जिस में से एक अत्यधिक कलात्मक स्तम्भ पर तीन अभिलेख है। परिसर में पुजारी के रूप में राजपुरोहित पूजा कार्य पीढ़ियों से करते आ रहे हैं। मंदिर में शिवरात्रि, शीतला अष्टमी के साथ श्रावण माह में मेले का माहौल रहता है। चण्डीनाथ महादेव की महिमा जन-जन की आस्था का केन्द्र है।

अ. श्री चण्डीश्वर महादेव (चण्डीनाथ)

चण्डीनाथ महादेव मंदिर परिसर का मुख्य मंदिर है, जिन्हें चण्डीश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। चण्डीनाथ महादेव का श्रृंगार अत्यधिक सम्मोहित करने वाला है, लिंग पर जटाधारी भगवान् शिव का मुखौटा धारण करवाया जाता है तथा किसी दूल्हे की भांति श्रृंगार किया जाता है। यह भीनमाल के शिवालयों में सर्वाधिक लोकप्रिय है। ये 'गौतम' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है। श्रीमाल पुराणके अनुसार, चंडीश्वर

महादेव का लिंग भव्य है। विधिपूर्वक चार वेद सीखने अथवा उत्तमोत्तम धार्मिक विधि करके जो फल मिलता है, वही चंडीश्वर महादेव की श्रद्धा और भक्तिभाव से दर्शन करने से मिलता है ।[13]

ब. प्रयुतेश्वर महादेव

प्रयुतेश्वर महादेव, चण्डीनाथ महादेव मंदिर उत्तर की ओर स्थित है। जिसका हाल ही में जीर्णोद्धार करवाया गया है, जो काफी भव्य निर्माण कार्य है। ये 'चन्द्रास' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है। श्रीमाल पुराण के अनुसार, किसी समय श्रीमाल नगर में चण्डीश्वर शिव की पूजार्चना के लिए हजारों ब्राह्मण बाहर से आये। उनमें यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ कि चण्डीश की सर्वप्रथम पूजन करने वाला ब्राह्मण पंक्ति से बाहर माना जायेगा। ब्राह्मण निस्तब्ध होकर बैठ गये। भगवान शिव की कृपा से सामने हजारों शिवलिंग दिखाई दिये। सभी आगंतुक ब्राह्मणों ने अनन्य भक्ति भाव से पूजार्चना की। भगवान ने प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहा। ब्राह्मणों ने वरदान मांगते हुए कहा कि, सर्वलिंग एक लिंग रूप में प्रकट हो। तब भगवान् शिव, प्रयुतेश्वर महादेव के रूप में स्थापित हुए।[14]

5. जागेश्वर महादेव, चण्डीनाथ महादेव परिसर के पीछे, भीनमाल

जागेश्वर महादेव मंदिर, चण्डीनाथ महादेव परिसर के पीछे दाईं ओर, भीनमाल में है। शिवलिंग बडा तथा भव्य है। मंदिर में कई भग्नावशेष है। ये 'हरितस' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है।

6. नवलकेश्वर महादेव, नवलेश्वर कॉलोनी, भीनमाल

नवलकेश्वर महादेव में काफी प्राचीन शिवलिंग है, जो बड़े आकार का है जिस पर नागफनी भी है।ये 'भारद्वाज' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है।

7. भूतेश्वर महादेव, अग्रवाल धर्मशाला के पास, भीनमाल

भूतेश्वर का लिंग पहले भीनमाल श्मशान के पास था, किन्तु आज यह भीनमाल के मध्य में है। लिंग अति प्राचीन और सुंदर है। इन्हें आनंदेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। ये 'लोढवान' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है।

8. त्र्यम्बकेश्वर महादेव, तलबी रोड, भीनमाल

त्र्यम्बकेश्वर महादेव मंदिर प्राचीन त्र्यम्बक सरोवर या तलबी तालाब की पाल के दक्षिण छोर पर थोडी उंचाई पर स्थित है। शिवलिंग देखने में छोटे आकार का एवं हल्के गहरे रंग का है। यहां सामान्य शिवालय की भांति विभिन्न प्रतिमाएं स्थापित है। त्र्यम्बक

सरोवर या तलबी तालाब एक समय में गौतम ऋषि का आश्रम था। श्रीमालपुराण में इसकी अत्यधिक मान्यताएं बताई गई है। ये 'कौशिक' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है। श्रीमाल पुराण के अनुसार, त्रिपुरा नामक दैत्य के नाश करने के फलस्वरूप त्र्यम्बकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए।[15]

9. पारेश्वर महादेव, नवदुर्गा मंदिर के सामने, जसवंतपुरा रोड, भीनमाल

पारेश्वर महादेव मंदिर का प्राचीन भग्नावशेष लिंग बड़ा एवं सफेद रंग का है तथा नवीन लिंग सामान्य है। इस मंदिर में गौशाला संचालित होती है। इस मंदिर के बाहर एक बहुत लम्बा एवं प्राचीन लिंग का भग्नावशेष भी है। ये 'पाराशर' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है। श्रीमाल पुराण के अनुसार, राक्षसों के द्वारा पाराशर ऋषि के पिता का भक्षण करने के फलस्वरूप पाराशर ने यज्ञानुष्ठान से सात देवियों एवं भगवान् शिव की आसाधना की, जिससे राक्षसों का नाश हो सके।[16]

10. जयेश्वर महादेव, ग्राम कोड़ी चौपावतान, भीनमाल

जयेश्वर महादेव मंदिर भीनमाल से रानीवाडा जाने वाली रोड पर भीनमाल से 7 किलोमीटर दूर ग्राम कोड़ी चौपावतान में है और सागी नदी के किनारे है। यह लिंग बड़ा एवं प्राचीन है। यह मंदिर आड़ेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। श्रावण शुक्ल एकादशी एवं शिवरात्रि को बड़ा मेला लगता है। ये 'शाण्डिल्य' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है।

11. भूभुरिश्वर महादेव, श्री सुंधापर्वत, भीनमाल

भूभुरिश्वर महादेव, सुंधा पर्वत की गुफा में स्थित चामुंडा देवी जिसे सुन्धा माता भी कहा जाता है, के सामने है। सुन्धा पर्वत पर मौजूद अभिलेख के अनुसार सुन्धा पर्वत क्षेत्र स्वयं आदिदेव भगवान् शिव की तपोभूमि रही है तथा यहां मौजूद एक शिवलिंग से पता चलता है कि यह स्थान लकुलीश सम्प्रदाय से भी जुडा रहा है।मार्गशीर्ष मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी की खास महिमा है। ये 'उपमन्यु' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है।[17]

12. दुधेश्वर महादेव, ग्राम सावीधर, भीनमाल

दुधेश्वर महादेवमंदिर सावीधर गांव के पास है। सावीधर गांव भीनमाल से 8 कि.मी. की दूरी पर है। यहां कुआं और धर्मशाला है। यह लिंग बड़ा एवं प्राचीन है तथा जिस पर नागफन भी है। इस स्थल के नजदीक ही सावीधर हनुमानजी का प्राचीन प्रख्यात मंदिर है। दुधेश्वर का स्थल यक्षकूप के पास आता है। ये 'वच्छस' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है। श्रीमाल पुराण के अनुसार, दुधरिश्वर नाम का गन्धर्व वीणा गायन करने में प्रख्यात था। दुधरिश्वर ने मेघनाद की पुत्री रमा के साथ गांधर्व पद्धति से विवाह किया। प्रसुति के दौरान रमा की मृत्यु हो जाती है। तीर्थयात्रा के दौरान दुधरिश्वर

 ISSN 2321-1288

श्रीमाल क्षेत्र में आकर बोरडी के वन में रहता हैं। वह रेती से बने उत्तम और बड़े लिंग की स्थापना कर विधिवत पूजा करने लगा और चंद्रायण व्रत करने लगा। वन में उसे सिर्फ बेर और उसके पत्ते ही खाने को प्राप्त हुए लेकिन उसने अपनी पुजा यथावत रखी। तब महादेव एवं देवी पार्वती के साथ प्रकट हुए और वरदान दिया। दुधरेश्वर के नाम से दुधरेश्वर महादेव पडा।[18]

13. नागेश्वर महादेव, ग्राम खाण्डादेवल, भीनमाल

नागेश्वर महादेव मंदिर ग्राम खाण्डादेवल में खेतों के मध्य स्थित हुआ है। भीनमाल से 10 किलोमीटर दूर है। यह लिंग बड़ा और भव्य होने के साथ-साथ सफेद आरस रंग का है एवं प्राचीन है। जिसके चारोंओर घुम्मटनहीं है। ये 'कपिंजल' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है।

14. गंगेश्वर महादेव, पांथावाड़ा, जिला बनासकांटा, गुजरात

गंगेश्वर महादेव मंदिर, भीनमाल से सर्वाधिक दूरी पर स्थित है, जो पांथावाडा, जिला बनासकांटा, गुजरात में है। श्रीमाल पुराण के अनुसार,गंगा को भगवान् शिव के साथ विहार करने की इच्छा हुई। जब दोनों एक सरोवर में विहार कर रहे थे, तब अचानक से देवी पार्वती वहां पंहुची। गंगा ने देवी पार्वती को मनाने के लिएउनकी आराधना की, तब देवी पार्वती उनकी नम्रता देखकर प्रसन्न हो गयी। इस प्रकार यह स्थान गंगेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हो गए। ये 'मोद्गल' गौत्र वाले श्रीमालियों के कुलदेवता है।[19] वर्तमान भीनमाल में ओर भी कई देवालय है, जिसमें नीलकंठ महादेव, नीम गौरिया भैरव, फाफडिया हनुमान प्रसिद्ध मंदिर है। देवियों के भी कई प्रख्यात मंदिर होने के साथ जैन जिनालय भी दर्जनों भर है।[20] इस प्रकार से उपर्युक्त आलेख में भीनमाल के देवालयों से सम्बंधित मान्यताएं स्पष्ट होती है। इन देवालयों में कई गौत्रों की कुलदेवता विराजमान है। यह मंदिर जन आस्था के केन्द्र के साथ-साथ सांस्कृतिक महत्व भी रखते हैं। इन मंदिरों में समय-समय पर लगने वाले मेलों, उत्सवों एवं धार्मिक अनुष्ठानों से आर्थिक-क्रियाकलाप भी संचालित होते हैं, जिससें भीनमाल का सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास हो रहा है।

संदर्भ

1. *गोपीनाथ शर्मा(राजस्थान की सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर,सोलहवां संस्करण, 2010, पृ. 15*
2. *राव गणपतसिंह चीतलवाणा, भीनमाल का सांस्कृतिक वैभव, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण, सन् 2011, पृ. 13*
3. *रत्नसंचयसूरीश्वर, जैन ग्रंथों की गोद में भीनमाल की भव्यता, श्री रंजनविजयजी जैन*

पुस्तकालय, मालवाड़ा, प्रथम संस्करण, सन् 2015, पृ. 291
4. www.wikipedia.org;Retrieved on 05.11.2020; 11 A.M.
5. रत्नसंचयसूरीश्वर, जैन ग्रंथों की गोद में भीनमाल की भव्यता, श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय, मालवाड़ा, प्रथम संस्करण, सन् 2015, पृ. 220
6. मातेश्वरी संदेश, मासिक पत्रिका, ग्रंथ लेखमाला 3, मार्च 2015, पृ. 15
7. पं. भोजराज द्विवेदी, श्रीमाल पुराण, अखिल भारतीय श्रीमाली ब्राह्मण संस्थान, जोधपुर, पृ. 5
8. ठाकुर प्रसाद शर्मा एवं डॉ. शाहिद अहमद, हवेनसाँग की भारत यात्रा, साहित्यागार, जयपुर, प्रथम संस्करण, सन् 2006, पृ. 413
9. डॉ. राजबहादुरसिंह, मंदिर संस्कृति, राज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2001, पृ. सं. 362-364 एवं वशिष्ठ मुनि, (हिन्दी अनुवादक : रमाकान्त एम. व्यास, संपादक : भावेश भारद्वाज) : श्रीमाल पुराण, श्रीमाली संदेश, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, सन् 2016, पृ. 202-205
10. साक्षात्कार : बाबूलाल मधुकर, उम्र 75 वर्ष, सेवानिवृत कर्मचारी, समाजसेवी एवं सचिव श्री वाराहश्याम ट्रस्ट, भीनमाल एवं जितेन्द्र शर्मा पुत्र महेन्द्र शर्मा, अध्यापक, भीनमाल
11. साक्षात्कार : जगदीश शर्मा, उम्र 55 वर्ष, मैनेजर श्री वाराहश्याम ट्रस्ट, भीनमाल
12. वशिष्ठ मुनि, हिन्दी अनुवादक : रमाकांन्त एम. व्यास, संपादक : भावेश भारद्वाज, श्रीमाल पुराण, श्रीमाली संदेश, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, सन् 2016, पृ. 90-93
13. वही, पृ. 159-70
14. वही, पृ. 180
15. वही, पृ. 46-53
16. राजेन्द्र ओझा, श्रीमाली गोत्रानुसार कुलदेवियां, अखिल भारतीय श्रीमाली मैत्री संगम, मुम्बई, सन् 2008, पृ. 33
17. भगवतीलाल शर्मा, श्री सूँधा माता तीर्थ, श्रीकृष्ण-रूकमणी प्रकाशन, जोधपुर, चतुर्थ संस्करण, सन् 2012, पृ. 15-22
18. वशिष्ठ मुनि (हिन्दी अनुवादक : रमाकान्त एम. व्यास, संपादक : भावेश भारद्वाज) : श्रीमाल पुराण, श्रीमाली संदेश, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, सन् 2016, पृ. 108-109
19. वही, पृ. 130-135
20. http://ignca.gov.in/; Retrieved on 02.09.2021; 11 P.M.